

उत्तर प्रदेश में कृषि क्षेत्रों की उत्पादकता वृद्धि और उसका जनमानस पर प्रभाव का भौगोलिक अध्ययन

डॉ.रमन प्रकाश¹

¹एसोसिएट प्रोफेसर – भूगोल विभाग, भारतीय महाविद्यालय, फर्रुखाबाद उ०प्र०

Received: 20 March 2026 Accepted & Reviewed: 25 March 2026, Published: 31 March 2026

Abstract

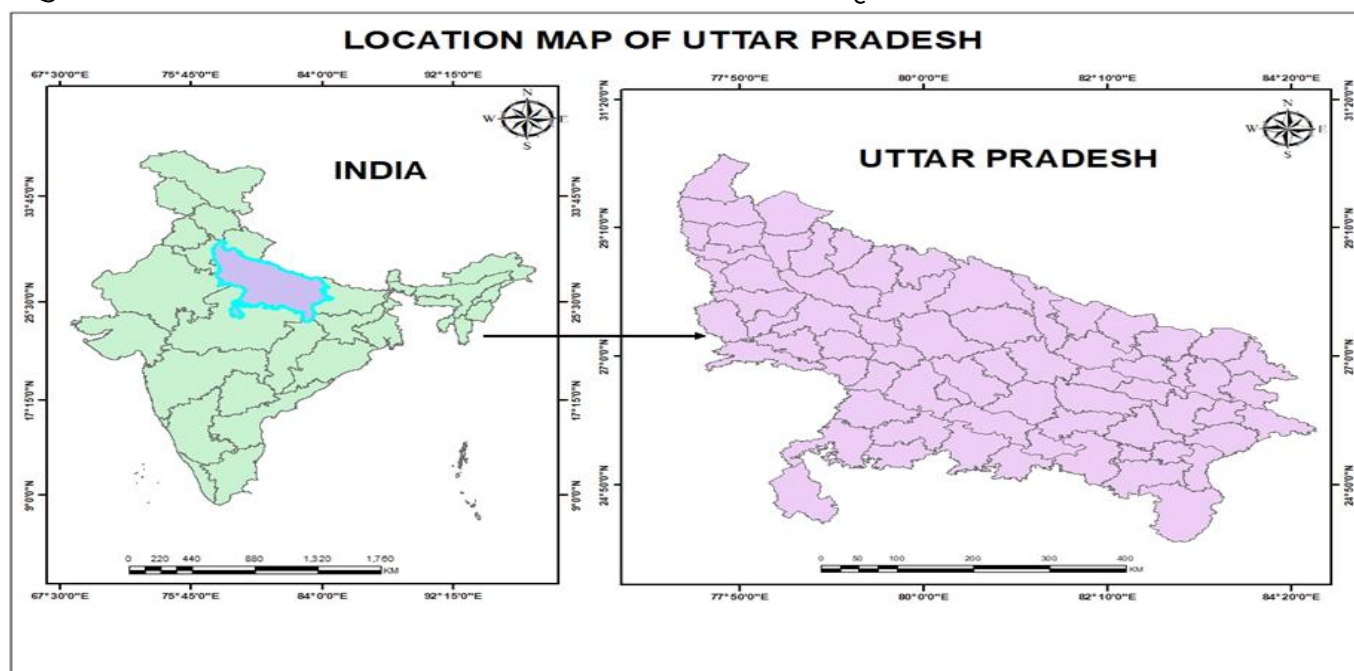
कृषि की उत्पादकता किसी देश की आर्थिक तरक्की और खाद्य सुरक्षा का एक अहम पैमाना है। इसका मतलब है जमीन, मजदूरी, तकनीक और दूसरे संसाधनों का सही इस्तेमाल करके खेती से बेहतर पैदावार हासिल करना। कृषि की उत्पादकता बढ़ने से आम लोगों पर बहुत अच्छा असर पड़ता है, इससे खाने-पीने की चीजों की उपलब्धता बढ़ती है, गाँवों में लोगों की आमदनी में सुधार होता है और कुल मिलाकर सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है। यह लेख कृषि की बढ़ती उत्पादकता का आम लोगों पर पड़ने वाले असर की पड़ताल करता है, जिसमें इसके आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय पहलुओं पर खास जोर दिया गया है। कृषि की ज्यादा उत्पादकता फसल का उत्पादन बढ़ाकर और खाने-पीने की चीजों की कमी के जोखिम को कम करके खाद्य सुरक्षा में अहम योगदान देती है। यह खाने-पीने की चीजों की कीमतों को स्थिर रखती है, पोषण के स्तर को बेहतर बनाती है और कृषि उत्पादों की भरोसेमंद आपूर्ति सुनिश्चित करती है। कृषि से ज्यादा पैदावार होने पर किसानों की आमदनी भी बढ़ती है, जिससे वे बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, आवास और कृषि के आधुनिक तरीकों में निवेश कर पाते हैं। इसके अलावा, कृषि में बढ़ोतरी से जुड़े हुए क्षेत्रों जैसे कि फूड प्रोसेसिंग, ट्रांसपोर्टेशन, स्टोरेज, मार्केटिंग और कृषि पर आधारित उद्योगों में रोजगार के मौके पैदा होते हैं, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होती है और गरीबी कम होती है। राष्ट्रीय स्तर पर, कृषि की बेहतर उत्पादकता निर्यात बढ़ाकर, उद्योगों को कच्चा माल सप्लाई करके और खाने-पीने की चीजों के आयात पर निर्भरता कम करके आर्थिक विकास में मदद करती है। हालाँकि कृषि को बहुत तेजी से सघन बनाने से पर्यावरणीय चुनौतियाँ भी पैदा हो सकती हैं, जैसे कि मिट्टी की गुणवत्ता खराब होना, पानी की कमी, जैव-विविधता का नुकसान और रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों के ज्यादा इस्तेमाल से होने वाला प्रदूषण। ये मुद्दे टिकाऊ कृषि के तरीकों को अपनाने की अहमियत को उजागर करते हैं, जो उत्पादकता और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाए रखते हैं। निष्कर्ष के तौर पर, कृषि की बढ़ी हुई उत्पादकता का समाज पर गहरा सकारात्मक असर पड़ता है। इससे खाद्य सुरक्षा बेहतर होती है, जीवन स्तर ऊँचा उठता है, रोजगार पैदा होते हैं और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है। फिर भी, टिकाऊ कृषि नीतियाँ, तकनीकी नवाचार और संसाधनों का जिम्मेदार प्रबंधन जरूरी है ताकि यह पक्का किया जा सके कि इन फायदों का समान रूप से बँटवारा हो और ये आने वाली पीढ़ियों के लिए भी उपलब्ध रहें। कृषि के विकास के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण समावेशी विकास को बढ़ावा दे सकता है, साथ ही प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा और लंबे समय तक सामाजिक कल्याण में मदद कर सकता है।

बीज शब्द – कृषि, जनसंख्या, जलवायु, कृषि तकनीकी, क्षेत्रीय विविधता, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, आर्थिक विकास।

Introduction

उत्तर प्रदेश, भारत का सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य होने के साथ-साथ देश की कृषि अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार स्तंभ है। भौगोलिक दृष्टिकोण से यह राज्य भारत के उत्तरी विशाल मैदान (गंगा-यमुना दोआब) में स्थित है, जहाँ की उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी, बारहमासी नदियाँ और अनुकूल मानसूनी जलवायु इसे कृषि कार्यों के लिए प्रकृति का एक अनुपम उपहार बनाती हैं। राज्य की लगभग 65% से अधिक जनसंख्या प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कृषि और उससे जुड़े क्षेत्रों पर निर्भर है। विगत कुछ दशकों में, विशेषकर हरित क्रांति के बाद से, उत्तर प्रदेश के कृषि परिदृश्य में व्यापक संरचनात्मक और तकनीकी परिवर्तन आए हैं। उन्नत किस्म के बीजों, रासायनिक उर्वरकों, आधुनिक कीटनाशकों, नलकूप सिंचाई प्रणालियों और यंत्रीकरण (ट्रैक्टर, कंबाइन, हार्वेस्टर आदि) के बढ़ते उपयोग ने कृषि क्षेत्रों की उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि की है। कृषि उत्पादकता में इस वृद्धि का सीधा प्रभाव यहाँ के जनमानस के सामाजिक-आर्थिक जीवन, प्रवास प्रतिरूप, पोषण स्तर, साक्षरता और जीवन स्तर पर पड़ा है। जहाँ एक ओर पश्चिमी उत्तर प्रदेश (जैसे- मेरठ, मुजफ्फरनगर, बागपत) ने कृषि-तकनीकी विकास के कारण समृद्धि की नई ऊँचाइयों को छुआ है, वहीं पूर्वी उत्तर प्रदेश और बुंदेलखंड जैसे क्षेत्र आज भी विभिन्न भौगोलिक, आर्थिक और संस्थागत बाधाओं के कारण उत्पादकता के मामले में अपेक्षाकृत पीछे हैं। प्रस्तुत शोध लेख उत्तर प्रदेश में कृषि उत्पादकता की क्षेत्रीय विविधताओं, उसके उत्तरदायी भौगोलिक कारकों और स्थानीय जनमानस पर उसके बहुआयामी प्रभावों का एक व्यापक भौगोलिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

अध्ययन क्षेत्र : उत्तर प्रदेश भारत के उत्तरी भाग में स्थित एक अत्यंत महत्वपूर्ण राज्य है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह भारत का चौथा सबसे बड़ा राज्य है, जबकि जनसंख्या की दृष्टि से यह देश का सबसे बड़ा राज्य है। है। उत्तर प्रदेश 23°52' उत्तरी अक्षांश से 30°24' उत्तरी अक्षांश तथा 77°03' पूर्वी देशांतर से 84°39' पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल लगभग 2,40,928 वर्ग किलोमीटर है, जो भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 7.3% है। जनसंख्या की दृष्टि से यह भारत का सबसे बड़ा राज्य



उत्तर प्रदेश के उत्तर में नेपाल तथा उत्तराखंड, पश्चिम में हरियाणा, दिल्ली और राजस्थान, दक्षिण में मध्य प्रदेश तथा पूर्व में बिहार और झारखंड स्थित हैं। इसकी राजधानी लखनऊ है, जबकि प्रयागराज, वाराणसी, कानपुर, आगरा, मेरठ और गोरखपुर इसके प्रमुख नगर हैं।

भौगोलिक दृष्टि से उत्तर प्रदेश को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया जाता है, उत्तर का तराई एवं भाबर क्षेत्र, मध्य का विशाल गंगा-यमुना का मैदान तथा दक्षिण का विंध्य एवं बुंदेलखंड का पठारी क्षेत्र। गंगा का मैदान अत्यंत उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी से बना है, जिसके कारण राज्य को भारत का प्रमुख कृषि क्षेत्र माना जाता है। दक्षिणी भाग अपेक्षाकृत ऊँचा एवं पथरीला है, जहाँ विंध्य पर्वतमाला का प्रभाव दिखाई देता है। उत्तर प्रदेश की जलवायु उष्णकटिबंधीय मानसूनी है। यहाँ तीन प्रमुख ऋतुएँ—ग्रीष्म, वर्षा और शीत ऋतु कृपाई जाती हैं। ग्रीष्म ऋतु में तापमान कई स्थानों पर 45 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच जाता है, जबकि शीत ऋतु में तापमान 3-4 डिग्री सेल्सियस तक गिर सकता है। राज्य में अधिकांश वर्षा दक्षिण-पश्चिम मानसून से जून से सितंबर के बीच होती है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में पश्चिमी भाग की तुलना में अधिक वर्षा होती है। राज्य की प्रमुख नदियों में गंगा, यमुना, घाघरा, गोमती, सरयू, राप्ती, गंडक, चंबल, बेतवा, केन और सोन प्रमुख हैं। ये नदियाँ सिंचाई, पेयजल, मत्स्य पालन तथा जलविद्युत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। प्रयागराज में गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती का संगम स्थित है, जो धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। उत्तर प्रदेश की मिट्टी मुख्यतः जलोढ़, दोमट, बलुई तथा काली मिट्टी के रूप में पाई जाती है। उपजाऊ भूमि और पर्याप्त जल संसाधनों के कारण यहाँ गेहूँ, धान, गन्ना, आलू, दालें, तिलहन तथा विभिन्न सब्जियों का व्यापक उत्पादन होता है। इसी कारण उत्तर प्रदेश को देश की कृषि अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार माना जाता है। प्राकृतिक वनस्पति की दृष्टि से राज्य के तराई क्षेत्रों में घने वन पाए जाते हैं। दुधवा राष्ट्रीय उद्यान सहित अनेक वन्यजीव अभयारण्य जैव विविधता के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। राज्य में बाघ, हाथी, हिरण, गैंडा तथा अनेक प्रकार के पक्षी पाए जाते हैं।

निष्कर्षतः उत्तर प्रदेश अपनी उपजाऊ भूमि, विशाल नदी तंत्र, अनुकूल जलवायु, विविध भौतिक संरचना तथा समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों के कारण भारत का एक अत्यंत महत्वपूर्ण राज्य है। कृषि, संस्कृति, पर्यटन और आर्थिक गतिविधियों के क्षेत्र में इसका विशेष स्थान है। इसकी भौगोलिक विशेषताएँ राज्य के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

अध्ययन के उद्देश्य: इस शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य उत्तर प्रदेश के संदर्भ में कृषि उत्पादकता और जनमानस के अंतर्संबंधों का भौगोलिक मूल्यांकन करना है। विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. कृषि उत्पादकता के क्षेत्रीय प्रतिरूप का विश्लेषण करना : उत्तर प्रदेश के विभिन्न कृषि-जलवायु क्षेत्रों में प्रमुख फसलों (गेहूँ, चावल, गन्ना, आलू) की उत्पादकता के स्थानिक वितरण को समझना।
2. उत्पादकता वृद्धि के भौगोलिक एवं तकनीकी कारकों की पहचान करना : मृदा, सिंचाई, यंत्रीकरण और सरकारी नीतियों की भूमिका का मूल्यांकन करना।
3. जनमानस पर आर्थिक प्रभावों का आकलन करना : कृषि उत्पादकता में वृद्धि के फलस्वरूप किसानों की आय, ऋणग्रस्तता और ग्रामीण रोजगार के अवसरों में आए बदलावों का अध्ययन करना।
4. सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन पर प्रभाव का अध्ययन करना : शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास की स्थिति, और ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों की ओर होने वाले प्रवास पर कृषि समृद्धि के प्रभाव को रेखांकित करना।

5. कृषि उत्पादकता की चुनौतियों की पहचान करना : भूमि क्षरण, भूजल स्तर का गिरना, और क्षेत्रीय असमानताओं जैसे मुद्दों का विश्लेषण कर सतत कृषि हेतु सुझाव देना।

शोध परिकल्पना : प्रस्तुत शोध की दिशा और निष्कर्षों की प्रामाणिकता को सिद्ध करने के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएं तैयार की गई हैं :

1— उत्तर प्रदेश में कृषि उत्पादकता का स्थानिक वितरण समरूप नहीं है; उन्नत सिंचाई सुविधाओं और यंत्रीकरण के कारण पश्चिमी उत्तर प्रदेश की कृषि उत्पादकता, पूर्वी उत्तर प्रदेश और बुंदेलखंड की तुलना में काफी अधिक है।

2— कृषि उत्पादकता में वृद्धि और ग्रामीण जनमानस के जीवन स्तर (आय, शिक्षा और स्वास्थ्य) के बीच एक सकारात्मक और सीधा संबंध है।

3— जिन क्षेत्रों में कृषि उत्पादकता और तकनीकी विकास उच्च स्तर पर है, वहाँ से आजीविका के लिए होने वाले बाह्य-प्रवास की दर कम है।

डेटा और शोध पद्धति : यह शोध लेख मुख्य रूप से द्वितीयांक आंकड़ों पर आधारित है, जिसे प्रामाणिक सरकारी और अर्ध-सरकारी स्रोतों से संकलित किया गया है। शोध को वैज्ञानिक और भौगोलिक दृष्टिकोण देने के लिए मात्रात्मक और विवरणात्मक दोनों पद्धतियों का उपयोग किया गया है।

डेटा के प्रमुख स्रोत :

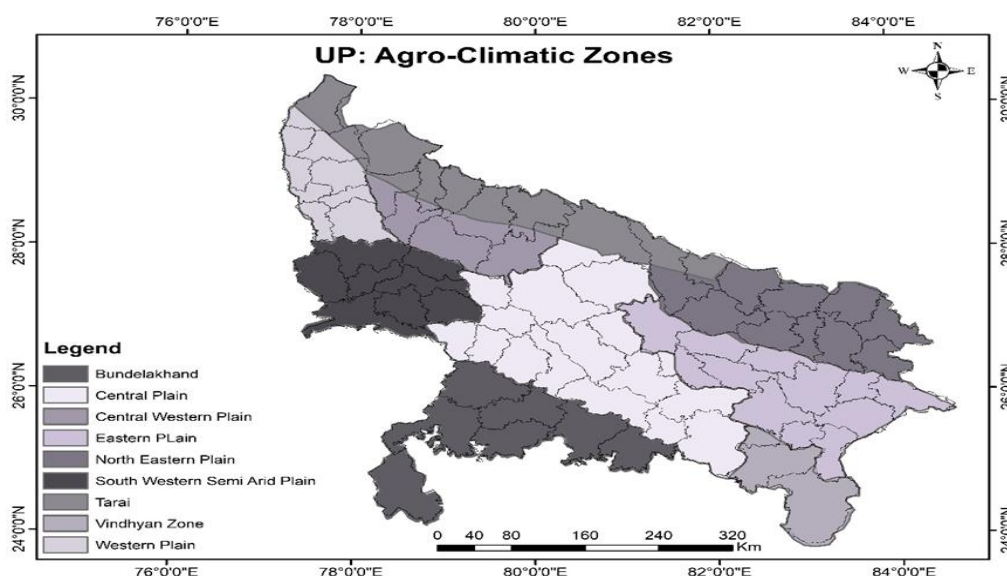
- उत्तर प्रदेश सांख्यिकीय पत्रिका : विभिन्न वर्षों के फसलवार क्षेत्र, उत्पादन और उत्पादकता के आंकड़े।
- कृषि गणना : जोतों के आकार और भूमि उपयोग प्रतिरूप की जानकारी।
- भारत की जनगणना : ग्रामीण जनसंख्या, साक्षरता, रोजगार और प्रवास से संबंधित आंकड़े।
- केंद्रीय भूजल बोर्ड एवं मौसम विज्ञान विभाग : वर्षा और सिंचाई के स्रोतों से संबंधित डेटा।
- प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाएं, नीति आयोग की रिपोर्ट और आर्थिक सर्वेक्षण।

सांख्यिकीय पद्धतियां : कृषि उत्पादकता के मापन के लिए प्रति हेक्टेयर उपज को आधार बनाया गया है। विभिन्न जिलों और क्षेत्रों के बीच तुलना के लिए भटिया या केंडल की कृषि उत्पादकता सूचकांक विधि के सिद्धांतों का वैचारिक उपयोग किया गया है। प्राप्त आंकड़ों को सारणीकरण और मानचित्रण तकनीकों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है ताकि भौगोलिक विविधताओं को स्पष्ट समझा जा सके।

उत्तर प्रदेश का भौगोलिक एवं कृषि-जलवायु प्रादेशीकरण : उत्तर प्रदेश एक विशाल राज्य है जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 2,40,928 वर्ग किलोमीटर है। भौगोलिक विविधता के आधार पर नीति आयोग ने उत्तर प्रदेश को 09 कृषि-जलवायु क्षेत्रों में विभाजित किया है। इन क्षेत्रों की मृदा, वर्षा और तापमान की भिन्नता ही कृषि उत्पादकता के क्षेत्रीय अंतर का मुख्य कारण है।

Research Stream

A Bi-Annual, Open Access Peer Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026



क्रम सं.	कृषि-जलवायु क्षेत्र का नाम	प्रमुख जिले क्षेत्र	मुख्य फसलें	उत्पादकता का स्तर
1	भाबर एवं तराई क्षेत्र	सहारनपुर, बिजनौर, पीलीभीत, लखीमपुर खीरी	धान, गन्ना, गेहूं	उच्च से मध्यम
2	पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	मेरठ, मुजफ्फरनगर, बागपत, गाजियाबाद	गन्ना, गेहूं, धान, आलू	अत्यधिक उच्च
3	उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	बरेली, बदायूं, शाहजहांपुर, मुरादाबाद	गेहूं, गन्ना, चावल	उच्च
4	मध्य मैदानी क्षेत्र	लखनऊ, कानपुर, उन्नाव, फतेहपुर, रायबरेली	गेहूं, धान, दलहन	मध्यम
5	उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र	गोरखपुर, देवरिया, बस्ती, कुशीनगर	धान, गेहूं, गन्ना	मध्यम से निम्न

Research Stream

A Bi-Annual, Open Access Peer Reviewed International Journal

Volume 03, Issue 01, March 2026

6	पूर्वी मैदानी क्षेत्र	वाराणसी, जौनपुर, गाजीपुर, आजमगढ़, इलाहाबाद	धान, गेहूं, सब्जियां	मध्यम
7	बुंदेलखंड क्षेत्र	झांसी, जालौन, हमीरपुर, बांदा, ललितपुर	दलहन (चना, अरहर), तिलहन	निम्न
8	विंध्य क्षेत्र	मिर्जापुर, सोनभद्र	धान, मोटे अनाज, दलहन	निम्न
9	दक्षिण-पश्चिमी अर्ध-शुष्क मैदान	आगरा, मथुरा, अलीगढ़, मैनपुरी	बाजरा, सरसों, गेहूं	मध्यम

कृषि उत्पादकता वृद्धि के प्रमुख भौगोलिक एवं तकनीकी कारक : विगत दशकों में उत्तर प्रदेश की कृषि उत्पादकता में जो अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज की गई है, उसके पीछे कई अंतर्संबंधित भौगोलिक और मानव-निर्मित कारक क्रियाशील रहे हैं :

1. सिंचाई सुविधाओं का विस्तार— उत्तर प्रदेश में मानसून की अनिश्चितता को देखते हुए सिंचाई कृषि का प्राण है। राज्य में शुद्ध बोए गए क्षेत्र का लगभग 85% से अधिक भाग सिंचित है। **नलकूप** : वर्तमान में नलकूप सिंचाई का सबसे बड़ा स्रोत हैं (लगभग 75% हिस्सेदारी)। इसने किसानों को मानसून पर निर्भरता से मुक्त किया है और वर्ष में तीन फसलें (जायद सहित) उगाने की स्वतंत्रता दी है। **नहर प्रणाली** : शारदा नहर, ऊपरी गंगा नहर और निचली गंगा नहर जैसी विशाल प्रणालियों ने पश्चिमी और मध्य उत्तर प्रदेश के बड़े हिस्से को सिंचित कर उत्पादकता बढ़ाने में मदद की है।
2. रासायनिक उर्वरक और उन्नत बीज — हरित क्रांति के बाद नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटैश के संतुलित और कभी-कभी अत्यधिक उपयोग ने प्रति हेक्टेयर उत्पादन को कई गुना बढ़ा दिया। गेहूं की कल्याण सोना, सोनालिका और धान की विभिन्न हाइब्रिड किस्मों के आगमन ने उत्तर प्रदेश को खाद्यान्न अधिशेष राज्य बना दिया।
3. कृषि यंत्रीकरण— पारंपरिक हल-बैल की जगह ट्रैक्टर, रोटोवेटर, थ्रेशर और कर्बाइन हार्वेस्टर के बढ़ते चलन ने कृषि कार्यों को तीव्र और कुशल बनाया है। यंत्रीकरण के कारण बड़े पैमाने पर फसलों की बुवाई और कटाई समय पर संभव हो सकी है, जिससे फसल चक्र की सघनता बढ़ी है।
4. संस्थागत और नीतिगत प्रयास— सरकार द्वारा दिए जाने वाले संस्थागत ऋण (केसीसी – किसान क्रेडिट कार्ड), बिजली पर सब्सिडी, और सबसे महत्वपूर्ण न्यूनतम समर्थन मूल्य की नीति ने किसानों को अधिक उत्पादकता देने वाली फसलों को उगाने के लिए आर्थिक सुरक्षा प्रदान की है।

कृषि उत्पादकता वृद्धि का विस्तृत भौगोलिक विश्लेषण (फसलवार) उत्तर प्रदेश देश के कुल खाद्यान्न उत्पादन में लगभग 18–20% का योगदान देकर शीर्ष स्थान पर है। यहाँ की प्रमुख फसलों की उत्पादकता के भौगोलिक प्रतिरूप का विश्लेषण निम्नवत है :

•गेहूँ : गेहूँ उत्तर प्रदेश की सबसे प्रमुख रबी फसल है। राज्य के कुल बोए गए क्षेत्र के एक बहुत बड़े भाग पर इसकी खेती होती है।

उत्पादकता प्रतिरूप : पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जिलों (जैसे गंगा-यमुना दोआब) में गेहूँ की उत्पादकता 3500–4500 किग्रा/हेक्टेयर तक है, जो राष्ट्रीय औसत से अधिक है। इसके विपरीत, बुंदेलखंड के पथरीले और जल-तनाव वाले क्षेत्रों में यह उत्पादकता घटकर 1500 –2000 किग्रा/हेक्टेयर रह जाती है।

•धान: धान खरीफ सीजन की मुख्य फसल है, जिसके लिए उच्च तापमान और अधिक जल की आवश्यकता होती है।

उत्पादकता प्रतिरूप : तराई क्षेत्र (लखीमपुर, पीलीभीत) और पूर्वी उत्तर प्रदेश (गोरखपुर, चंदौली – जिसे पूर्वी यूपी का धान का कटोरा भी कहा जाता है) धान के प्रमुख उत्पादक हैं। ट्यूबवेल तकनीक के प्रसार के कारण अब पश्चिमी जिलों में भी धान की रिकॉर्ड उत्पादकता प्राप्त की जा रही है, हालांकि यह भूजल संकट को जन्म दे रहा है।

•गन्ना : उत्तर प्रदेश भारत का अग्रणी चीनी उत्पादक राज्य है। गन्ना एक नकदी फसल होने के कारण राज्य की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सीधे नियंत्रित करता है।

उत्पादकता प्रतिरूप : गन्ने की खेती मुख्य रूप से दो पट्टियों में केंद्रित है—पश्चिमी उत्तर प्रदेश (मेरठ, मुजफ्फरनगर, शामली) और तराई क्षेत्र। पश्चिमी क्षेत्र में मिलों की निकटता और उन्नत ड्रिप सिंचाई (कुछ क्षेत्रों में) के कारण गन्ने की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता बहुत उच्च है, जिससे यहाँ के किसान आर्थिक रूप से सुदृढ़ हैं।

ग्रामीण जनमानस पर कृषि उत्पादकता वृद्धि का बहुआयामी प्रभाव : कृषि उत्पादकता में होने वाली वृद्धि केवल एक सांख्यिकीय आंकड़ा नहीं है। इसका सीधा संबंध भूमि पर रहने वाले इंसानों के जीवन, उनकी सोच और सामाजिक ताने-बाने से होता है। उत्तर प्रदेश के जनमानस पर इसके प्रभावों को निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है :

•आर्थिक प्रभाव: आय में वृद्धि और ग्रामीण समृद्धि— उत्पादकता में वृद्धि का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव ग्रामीण परिवारों की डिस्पोजेबल आय पर पड़ा है।

आर्थिक संचय: विशेष रूप से पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों के पास अधिशेष उत्पादन बेचने से नकद धन का प्रवाह बढ़ा। इस धन का निवेश आधुनिक पक्के मकानों के निर्माण, उपभोक्ता वस्तुओं (मोटरबाइक, कार, रेफ्रिजरेटर, टेलीविजन) की खरीद और कृषि में पुनर्निवेश के रूप में देखा जा सकता है।

ऋणग्रस्तता का स्वरूप बदला: पारंपरिक साहूकारों के चंगुल से निकलकर अब किसान संस्थागत ऋणों की ओर बढ़े हैं। हालांकि, उत्पादकता बढ़ाने की अंधी दौड़ में रासायनिक इनपुट की बढ़ती लागत ने छोटे और सीमांत किसानों को कर्ज के जाल में भी धकेला है।

•सामाजिक प्रभाव : शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन स्तर— आर्थिक सुदृढ़ता ने ग्रामीण समाज के सामाजिक संकेतकों को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है।

शिक्षा का प्रसार: कृषि से होने वाली अच्छी आय के कारण अब किसान अपने बच्चों को स्थानीय सरकारी स्कूलों के बजाय कस्बों और शहरों के निजी अंग्रेजी माध्यम स्कूलों और उच्च शिक्षण संस्थानों में भेजने में सक्षम हुए हैं। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता दर और कौशल विकास में वृद्धि हुई है।

महिला सशक्तिकरण और स्वास्थ्य : जिन क्षेत्रों में कृषि उत्पादकता उच्च है, वहाँ पोषण के स्तर में सुधार हुआ है। मातृ और शिशु मृत्यु दर में कमी आई है क्योंकि लोग बेहतर चिकित्सा सुविधाएं वहन कर सकते हैं। कृषि के यंत्रीकरण ने महिलाओं को खेतों के कठिन शारीरिक श्रम से कुछ हद तक राहत दी है, जिससे वे घरेलू निर्णयों और बच्चों की परवरिश पर अधिक ध्यान दे पा रही हैं।

जनसांख्यिकीय प्रभाव : प्रवास प्रतिरूप में बदलाव : भौगोलिक अध्ययन में जनसंख्या का प्रवास एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटक है। कृषि उत्पादकता का प्रवास से गहरा संबंध है। बाह्य-प्रवास में कमी (पश्चिमी क्षेत्र) : पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कृषि वर्ष भर रोजगार के अवसर प्रदान करती है (गन्ना और बहु-फसली प्रणाली के कारण)। परिणामस्वरूप, यहाँ से आजीविका के लिए दिल्ली या अन्य महानगरों की ओर होने वाला मजबूरन पलायन बहुत कम है। बल्कि, यहाँ बिहार और पूर्वी यूपी के श्रमिक कटाई के सीजन में आते हैं।

पूर्वी उत्तर प्रदेश और बुंदेलखंड का परिदृश्य : इसके विपरीत, पूर्वी क्षेत्रों और बुंदेलखंड में निम्न उत्पादकता और रोजगार के अभाव के कारण आज भी पुरुष-प्रवास की दर बहुत अधिक है। यहाँ के ग्रामीण युवा मुंबई, दिल्ली, गुजरात और पंजाब की ओर पलायन करते हैं, जिससे पीछे छोटे गांवों में कृषि का महिलाकरण देखा जा रहा है। ग्रामीण-शहरी सातत्य का विकास : उच्च उत्पादकता वाले कृषि क्षेत्रों के आस-पास तेजी से अर्ध-शहरी केंद्रों का विकास हुआ है। मंडी कस्बों का उदय हुआ है जहाँ कृषि इनपुट (बीज, खाद, मशीनरी) की दुकानें, कोल्ड स्टोरेज, बैंक और मरम्मत कार्यशालाएं खुल गई हैं। इसने ग्रामीण जनमानस के दृष्टिकोण को आधुनिक और बाजार-उन्मुख बनाया है।

कृषि उत्पादकता वृद्धि से उत्पन्न भौगोलिक एवं पर्यावरणीय चुनौतियाँ : जहाँ एक ओर उत्पादकता वृद्धि ने जनमानस को आर्थिक समृद्धि दी है, वहीं दूसरी ओर इसके अति-दोहन और अनियोजित भौगोलिक प्रबंधन ने गंभीर संकटों को भी जन्म दिया है, जो दीर्घकाल में जनमानस के अस्तित्व के लिए खतरा हैं :

- कृषि उत्पादकता में तीव्र वृद्धि (अत्यधिक इनपुट)
- भूजल का अंधाधुंध दोहन —► जल स्तर में गिरावट (डार्क जोन)
- रासायनिक उर्वरकों का अतिप्रयोग —► मृदा लवणता (त्मीध्रंससंत) एवं कैंसर जैसी बीमारियां

—► फसल चक्र की एकरूपता (गेहूँ-धान) —► जैव विविधता का ह्रास और पराली दहन की समस्या

भूजल का अनियंत्रित दोहन – नलकूपों द्वारा धान जैसी पानी की अधिक खपत वाली फसलों को उगाने के कारण पश्चिमी उत्तर प्रदेश और मध्य उत्तर प्रदेश के कई ब्लॉक डार्क जोन में परिवर्तित हो चुके हैं। जल स्तर प्रतिवर्ष कई फीट नीचे जा रहा है, जिससे भविष्य में पेयजल का संकट गहराने लगा है।

मृदा स्वास्थ्य का क्षरण – अत्यधिक रासायनिक खादों (विशेष रूप से यूरिया) के प्रयोग से मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरता नष्ट हो रही है। मिट्टी में सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी हो गई है और कतिपय क्षेत्रों में भूमि क्षारीय या लवणीय होकर बंजर होने की कगार पर है।

स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव – कीटनाशकों और रासायनिक खादों के अंधाधुंध छिड़काव के कारण ये रासायन खाद्य श्रृंखला में प्रवेश कर चुके हैं। उत्तर प्रदेश के कुछ सघन कृषि वाले जिलों में कैंसर, किडनी की बीमारियाँ और न्यूरोलॉजिकल विकारों के मामलों में वृद्धि देखी गई है, जो सीधे तौर पर प्रदूषित जल और दूषित खाद्यान्न का परिणाम है।

क्षेत्रीय असमानताएँ : एक भौगोलिक तुलनात्मक विश्लेषण: उत्तर प्रदेश के कृषि परिदृश्य की सबसे बड़ी विडंबना इसकी क्षेत्रीय असमानता है। प्रस्तुत शोध के परिकल्पना के समर्थन में यदि हम पश्चिमी उत्तर प्रदेश और बुंदेलखंड-पूर्वी उत्तर प्रदेश की तुलना करें, तो स्पष्ट भौगोलिक अंतर दिखाई देता है:

पश्चिमी उत्तर प्रदेश: जलोढ़ मिट्टी, 100% के करीब सिंचित क्षेत्र, बड़ा जोत आकार, और गन्ने जैसी नकदी फसल की प्रधानता। परिणामतः उच्च प्रति व्यक्ति आय, आधुनिक जीवन स्तर, और मजबूत ग्रामीण बुनियादी ढांचा।

बुंदेलखंड क्षेत्र: कछारी और लाल-काली पथरीली मिट्टी, वर्षा की अत्यधिक अनिश्चितता (अक्सर सूखा), सिंचाई के साधनों का अभाव (कुओं और तालाबों पर निर्भरता), और केवल दलहन-तिलहन की खेती। परिणामतः गरीबी, बड़े पैमाने पर पलायन, कर्ज का जाल और किसानों की आत्महत्या जैसी त्रासदियाँ।

यह भौगोलिक विभाजन यह सिद्ध करता है कि प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता और तकनीकी पैठ का जनमानस के विकास पर सीधा और असमान प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष एवं नीतिगत सुझाव :

निष्कर्ष: प्रस्तुत भौगोलिक अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि उत्तर प्रदेश में कृषि क्षेत्रों की उत्पादकता में वृद्धि ने ग्रामीण जनमानस के सामाजिक-आर्थिक जीवन को बदलने में एक उत्प्रेरक की भूमिका निभाई है। शोध में प्रस्तावित परिकल्पनाएं सिद्ध होती हैं कि कृषि समृद्धि ने शिक्षा, स्वास्थ्य और उपभोग के स्तर को सुधारा है और अनैच्छिक प्रवास को रोकने में मदद की है।

हालांकि, यह वृद्धि पूरे राज्य में समान नहीं है और इसके साथ आए पर्यावरणीय दुष्प्रभाव (जैसे भूजल स्तर का गिरना और मृदा क्षरण) इस विकास के सातत्य पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं। यदि समय रहते सुधारात्मक कदम नहीं उठाए गए, तो आज की उत्पादकता वृद्धि कल के जनमानस के लिए एक भौगोलिक आपदा बन सकती है।

सुझाव : राज्य में कृषि उत्पादकता को संधारणीय बनाने और जनमानस के कल्याण को दीर्घकालिक रखने के लिए निम्नलिखित भौगोलिक और नीतिगत रणनीतियां अपनाई जानी चाहिए:

- सदाबहार क्रांति की आवश्यकता: रासायनिक कृषि के स्थान पर एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन और जैविक/प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि मृदा स्वास्थ्य की रक्षा हो सके।
- फसल विविधीकरण : गेहूं-धान के पारंपरिक और पानी सोखने वाले चक्र से हटकर किसानों को उच्च मूल्य वाली फसलों जैसे बागवानी (फल, फूल), सब्जियों, औषधीय पौधों और डेयरी फार्मिंग की ओर मोड़ना चाहिए।
- सूक्ष्म सिंचाई तकनीक : बुंदेलखंड और अन्य जल-तनाव वाले क्षेत्रों में पानी की एक-एक बूंद का सही उपयोग करने के लिए ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली पर भारी सब्सिडी दी जानी चाहिए।
- कृषि-प्रसंस्करण उद्योगों की स्थापना : ग्रामीण क्षेत्रों में ही कोल्ड चेन, फूड प्रोसेसिंग यूनिट्स की स्थापना की जाए ताकि अधिशेष कृषि उत्पादों का मूल्यवर्धन हो सके और स्थानीय स्तर पर गैर-कृषि रोजगार सृजित हो, जिससे शहरों की ओर पलायन रुके।
- पूर्वी उत्तर प्रदेश और बुंदेलखंड के लिए विशेष पैकेज : इन क्षेत्रों की विशिष्ट भौगोलिक परिस्थितियों (जैसे बुंदेलखंड में जल संचयन के लिए पारंपरिक तालाबों का पुनरुद्धार) के अनुरूप क्षेत्रीय कृषि योजनाएं बनाई जानी चाहिए।

सन्दर्भ सूची :

1. अहमद, ए. (2002): भारत का भूगोल, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर।
2. निदेशक, अर्थ एवं संख्या प्रभाग (2022-2025): उत्तर प्रदेश की सांख्यिकीय पत्रिका, नियोजन विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ।
3. नीति आयोग (2018): कृषि और जल संसाधनों का क्षेत्रीय सूचकांक और रिपोर्ट, भारत सरकार, नई दिल्ली।
4. बंसल, पी. सी. (2017): Agricultural Problems of India, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
5. सिंह, एम. बी. (2010): कृषि भूगोल के तत्व, तारा पब्लिकेशन, वाराणसी।
6. हुसैन, माजिद (2015): कृषि भूगोल, मैक्ग्रॉ हिल एजुकेशन (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
7. तिवारी, आर. सी. (2018): भारत का भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
8. Bhatia, S. S. (1967): "A New Approach to Measuring Agricultural Productivity in Uttar Pradesh", Economic Geography, Vol. 43, No. 3, pp. 244-260.
9. Kendall, M. G. (1939): "The Geographical Distribution of Crop Productivity in England", Journal of the Royal Statistical Society, Vol. 102, No. 1, pp. 21-48.
10. Government of India (2021): Provisional Reports of Tenth Agricultural Census 2015-16, Ministry of Agriculture & Farmers Welfare, New Delhi.